पंडित दीनदयाल उपाध्याय के जीवन व्यक्तित्व कृतित्व एवं विचार

डॉ अनीता देवी

एसोसिएट प्रोफेसर, राम मनोहर लोहिया, राजकीय महाविद्यालय, आवला, बरैली

यद्यपि भारत में समाजवादी विचार और समाजवादी पार्टी या उस समय से ही विद्यमान है जब से यूरोपीय विचारों ने यहां के शिक्षित लोगों को प्रभावित करना आरंभ किया तथा भी सैद्धांतिक रूप से समाजवाद यहां के निवासियों के राजनीतिक व सामाजिक जीवन में अपना कोई विशेष स्थान नहीं बना सका। परंतु आवडी अधिवेशन के पश्चात जिसमें समाजवादी समाज रचना को अपना अंतिम लक्ष्य घोषित किया, वहीं जन साधारण और देश दोनों की स्थिति बदल गई। जहां तक जनसाधारण का प्रश्न है वह आज भी उससे उतनी ही दूर है। समाजवाद के लक्ष्य को अपनाए जाने के बाद भी यह जनता का हित स्पष्ट नहीं कर पाया है। जनता उसके प्रति उत्साहित नहीं है, परंतु ऐसा समझा जाने लगा है, कि सरकार की नीतियां उसी के अनुरूप बदलती जा रही है, और इस कारण जो सरकारी निर्णयों को प्रभावित करने का विचार करते हैं उन्हें अपनी चिंता हो गई है। आज इस विचारधारा के अनुयायियों की संख्या के अनुपात में इसे कहीं अधिक महत्व प्राप्त हो गया है। (1-5)

साथ ही प्रधानमंत्री की लोकप्रियता और सम्मान के कारण कुछ समय के लिए तो ऐसा लगने लगा मानो समाजवाद यहां की जनता को सर्वप्रिय 'जीवन दर्शन' हो गया हो। आज अपने आपको समाजवादी कहना एक फैशन सा लगने लगा है, समय के प्रवाह में बहने वाली राजनीतिक पार्टियों मैं तो इस बात की होड़ लगी है कि, उनमें से कौन अपने को समाजवाद का बड़ा पुरस्कर्ता सिद्ध कर सकता है। हिंदू महासभा में हिंदू समाजवाद की बातें करने लगी है। वैदिक विचारको ने भी पुराना साहित्य कुरेदकर वैदिक समाजवाद की नई खोज कर डाली है।(4-9)

समाजवाद के विभिन्न स्वरूप

इस देश में कांग्रेस समाजवाद का नारा बुलंद करने वाली प्रथम पार्टी नहीं है कांग्रेस द्वारा समाजवाद स्वीकार किए जाने के पूर्व भी यहां समाजवादी पार्टी थी और आज भी हैं। विभिन्न समाजवादी पार्टी के असंतुष्ट लोग भी अपने को समाजवादी ही कहते हैं। इतना ही नहीं उनका तो दावा यह होता है कि वह जिस समाजवाद को मानते हैं वही अधिक शुद्ध है इस स्थिति में समाजवाद के बारे में और अधिक भ्रम बढ़ा दिया है। यूरोप में वैसे भी समाजवाद के अनेक प्रकार विद्यमान है। रूजवेल्ट हिटलर मुसोलिनी और स्टालिन सभी अपने आप को समाजवादी कहते थे।

ऐसे भी लोगों की कमी नहीं है जिन्होंने स्वयं प्रत्यक्ष राजनीति से दूर रहने के बाद भी अनेक प्रकार के समाजवादी सिद्धांतों की रचना कर डाली है। भारत में इन प्रकार के

समाजवादी बंधुओं के अनुयाई विद्यमान हैए इस प्रकार के भी प्रयास यहां होते रहे हैं जिसमें यूरोपीय समाजवाद को भारतीय सामाजिक सांस्कृतिक जीवन के अनुरूप डालकर स्वीकार करने का आंकड़ा रहा हो।

एकात्म मानव दर्शन द्वारा शिक्षा का स्वरूप

देशभक्ति पर आधारित दैशिक शास्त्र भारत वर्ष को पराक्रम प्रदान करने के लिए राष्ट्रवाद की आवश्यकता है। जिनमें पूरी दुनिया को एकात्म मानवतावाद की कड़ी से जोड़ा जा सकता है। इस प्रकार प्रदान की गयी शिक्षा समाज एवं राष्ट्र के लिए अत्यन्त उपयोगी होती है तथा ऐसे शिक्षक विचारों से भारतीय शिक्षा को राष्ट्रीय चेतना प्राप्त होती है।

आज सम्पूर्ण जगत में पिछली किसी भी सदी से ज्यादा शिक्षा है ज्यादा विद्यालय है लेकिन आज पिछली किसी भी सदी से ज्यादा अशान्ति है, दुःख है, ज्यादा पीड़ा है घृणा है, ईर्ष्या है जलन है। अतः निश्चित है कही कोई बुनियाद में खराबी है और इस तरह की खराबी का दायित्व और किसी पर इतना ज्यादा नहीं है जितना उन पर जिनका शिक्षा से सम्बन्ध है चाहे वह शिक्षक हो चाहे शिक्षार्थी ष्सा विद्या या विमुक्तेष् अर्थात् जो मुक्ति प्रदान करें जिनके द्वारा हम रोग, शोक, द्ववेष, पाप, दीनता, दास्ता, गरीबी, बेकारी, आभाव, अज्ञान, दुर्गुण, कुसंस्कार आदि की दास्ता से मुक्ति प्रदान कर सके वह विद्या है। ऐसी विद्या को प्राप्त करने वाले विद्वान कहे जाते है। प्राचीन समय में आज जितने स्कूल कालेज न थे पढ़ने वाले छात्रों को पुस्तकों के बोझ लादकर विद्यालय नहीं जाना पड़ता था। दिन रात आवश्यक बाते रटाने की पद्धति को आज की रक्षा प्रणाली का कहीं दर्शन भी न था तो लोग विद्वान होते थे।

उपयोगी शिक्षा और विद्या का इतना अधिक प्रचलन था कि हर गांव और नगर स्वतः एक कालेज था। वहाँ के निवासी अपने घर वालो, कुटुम्बिकों और नगर वासियों से बहुमूल्य ज्ञान प्राप्त कर लेते थे। तोता रटन की अपेक्षा जीवन की उपयोगी और आवश्यक शिक्षा क्रियात्मक रीति में प्राप्त की जाती थी। प्रत्यक्ष प्रमाण और अनुभव द्वारा वे तथ्य शिक्षार्थियों को हृदय–गम्य हो जाते थे। दर्शन, विज्ञान, चिकित्सा, खगोल, भू–गर्भ, प्राणिशास्त्र, रसायन, शिल्प, वास्तु, अर्थ, नीति धर्म, अधात्म आदि विषयों के विशेषज्ञ घर–घर में होते थे। इन विषयों की वे क्रियात्मक जीवन में अनुभवपूर्ण शिक्षा प्राप्त करते थे और अपने विषयों के सुयोग्य ज्ञाता बन जाते थे।

स्त्रियों की शिक्षा की स्थिति

पुरूषों के समान स्त्रियां भी अपनी विद्वता में, शिक्षा में आगे बढ़ी चढ़ी थी। स्त्रियों के कालेज कहाँ थे इसकी जानकारी इतिहास से प्राप्त नहीं होती लेकिन आज के श्गर्ल्स कालेजश की अपेक्षा उस समय की स्थिति अधिक सुशिक्षित होती है।

कबीर, रहीम, दादू आदि संत शिक्षा की दृष्टि से पिछड़े हुए कहे जा सकते हैं वे साहित्य और व्याकरण के उतने विद्वान न थे परन्तु जो भी उन्होंने सीखा था वे आज के ग्रेजुयेटो की अपेक्षा बहुत उपयेगी एवं वास्तविक थी। कैसी शिक्षा उपयोगी हो सकती है?

हम क्या करें एवं बच्चों को क्या पढ़ायें यह एक रोचक प्रश्न है। जिस ज्ञान के आधार पर दुखदायी बन्धनों से छुटकारा प्राप्त किया जा सके वही विद्या है। रोग, शोक, द्वेष, पाप, दीनता, दास्ता, गरीबी, बेकारी, अभाव, अज्ञान, दुर्गुण, कुसंस्कार आदि के शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक बंधनों से मुक्ति प्राप्त करने की योग्यता शक्ति जिस उपाय द्वारा मिल वही विद्या है। उसे ही सीखना और सिखाना उचित है।

भारत के लिए ऐसे विचारिक दर्शन की आवश्यकता है जो भारतीय राष्ट्रीय परिवेश में सर्वथा अनुकूल सामाजिक परिवर्तन की दृष्टि से लाभकारी और राष्ट्र को परमवैभव तक पहुँचाने में समर्थ है। हमें इस युग को श्रम युग समझकर युग निर्माण के कार्य में जुटना है। जिसके सामने रोजी–रोटी का सवाल है, जिसके पास ने रहने का मकान है न तन ढकने को वस्त्र उनको सम्पन्न बनाना हमारा लक्ष्य हो। जो प्रवृत्ति और व्यवस्था जो राजनीति और अर्थनीति जो सामाजिक नियम और शिक्षा पद्धति हमें कर्महीन, निद्रालु, आलसी और बेईमान बनाए उसे बदलने के लिए करबद्ध हो जाये;4द्ध।

दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना

इस योजना का मुख्य उद्देश्य गरीबों को विश्वस्तरीय प्रशिक्षण, वित्तपोषण (Funding), रोजगार उपलब्ध कराने में जोर देने, रोजगार स्वामी बनाने, अजीविका में उन्नति करने और विदेशों में रोजगार प्रदान करने के लिए सक्षम बनाना है। डेमोग्राफिक सरप्लस को डेमोग्राफिक डेविडेन्ट में बदलने के लिए एतिहासिक अवसर प्रस्तुत करता है। ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा लागू की गयी इस योजना में गरीब परिवारों से सम्बन्ध रखने वाले ग्रामीण युवाओं की उत्पादक क्षमता और विकासशील कौशल द्वारा समावेशी (प्दबसनेपअम) विकास के लिए। इस राष्ट्रीय एजेण्डे को चलाया जा सके।

स्टार्टअप इण्डिया और स्टैण्डअप इण्डिया योजना

इस योजना को केन्द्र सरकार द्वारा 16 जनवरी 2016 से शुरू की गयी यह योजना लोगों को अपना सफल उद्योग खोलने के लिए प्रत्यक्ष रूप से सहायता करेगी इस पहल से देश में विकास की जरूरत के हिसाब से सकारात्मक बदलाव लाने की योजना बनाई गयी है। यह दुनिया भर में अपने देश के युवाओं की प्रतिभा को कारोबार के माध्यम से दिलाने में मदद करेंगी। भारतीय प्रौद्योगिक संस्थान, केन्द्रीय विश्वविद्यालयों, भारतीय प्रबन्धन संस्थाने सहित सभी संस्थानों के इस कार्यक्रम के बारे में जागरूपता फैलाने की जरूरत है। ताकि भविष्य में इस योजना के माध्यम से सीधे जुड़ सकें।

दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण ज्योति योजना

20 नवम्बर 2014 को प्रारम्भ की गयी इस योजना का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण भारत को लगातार बिजली प्रदान करना है। इस योजना का मुख्य उद्देश्य कृषि एवं गैर कृषि फीडर सुविधाओं को अलग–अलग करना है। जिससे कृषि कार्यों हेतु समुचित बिजली का प्रबन्ध किया जा सके तथा फसलों की उत्पादकता की बढ़ोत्तरी हो सके । किसानो को वर्षा पर निर्भर न रहना पड़े जिससे वे फसलों का उत्पादन करें तथा फसलों का उचित । मूल्य भी प्राप्त कर सकें।

मेक इन इण्डिया योजना

इस योजना की शुरूआत 25 सितम्बर 2014 को की गयी जिसका मुख्य उद्देश्य लोगों को रोजमर्रा के उपयोग किये जाने वाले ज्यादा से ज्यादा सामानों का भारत में उत्पादन कराना था जिससे सामान की कीमत कम होगी और बाहर निर्यात होने से देश की अर्थव्यवस्था को फायदा होगा देश में रोजगार बढ़ेगा गरीबी कम होगी उच्च गुणवत्ता का सामान कम कीमत पर बनेगा दूसरे मुल्क के निवेशक हमारे यहाँ पैसा । लगायेंगे जिससे देश में बाहर से पैसा आयेगा देश का नाम दुनिया में प्रसिद्ध होगा देश के नौजवान विदेश न जाकर देश में रहकर ही काम करना पसन्द करेंगे।

निष्कर्ष

इस प्रकार एकात्म मानव दर्शन का शिक्षा एवं शिक्षक दोनों ही के ऊपर प्रत्यक्ष एवं परोक्ष दोनों रूपों में प्रभाव है। प्राचीन काल से लेकर आज तक इन प्रभावों को महसूस किया गया है। आधुनिक समय में हम इनके व्यवहारिक रूप उपरोक्त योजनाओं द्वारा परिलक्षित होता है। यहाँ शिक्षार्थी एवं शिक्षक दोनों को ही देश के निर्माण में पूर्ण रूप से भागीदारी की जरूरत है।

इस प्रकार उपरोक्त विचारों से एकात्म मानव दर्शन द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में नयी क्रान्ति का उद्य सम्भव है एवं इन विचारों द्वारा नागरिक अपने परिवार, समाज एवं राष्ट्र हित के उत्थान के लिए योगदान कर देश का चहुमुखी विकास करने में अपनी सक्रिय भूमिका निभा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल जे0 सी0:1972 "विद्यालय प्रशासन" , आर्य बुक डिपो, करौलबाग, नई दिल्ली–51
2. भिषीकर, चन्द्रशेखर परमानन्दः1991, द्वितीय संस्करण, "पं0 दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन" खण्ड–5 (राष्ट्र की अवधारणा), सुरुचि प्रकाशन, झण्डेवालान, नईदिल्ली–110055
3. देवधर, विश्वनाथ नारायणः1987, प्रथम संस्करण ,"पं0 दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन", खण्ड–7

4. लाल, रमन बिहारीः2003, पन्द्रहवाँ संस्करण "शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार" रस्तोगी पब्लिकेशन्स, शिवाजी रोड, मेरठ–250002
5. लाल, रमन बिहारी व सुनीता पलोड़ः2006, प्रथम संस्करण, "शैक्षिक चिन्तन एवं प्रयोग", आर0लाल बुक डिपो, निकट राजकीय इण्टर कॉलिज, मेरठ–250001
6. मित्तल, एम0एल0:2004, "उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक", इन्टरनैशनल पब्लिशिंग हाउस,मेरठ
7. माथुर, एस0 एस0:1997 "शिक्षा के दार्शनिक तथा सामाजिक आधार", विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा